SAMVADIKA
International Peer-Reviewed Interdisciplinary Bilingual Quarterly Research Journal for Humanities and Social Sciences
Email: ubsirjhss@gmail.com, manishmuntazir@gmail.com

उज्बेक और हिंदी भाषाओं में खाद्य-सामग्री आधारित मुहावरों का भाषा-सांस्कृतिक तुलनात्मक अध्ययन

रखमतजोनोवा कामोला अब्दुमुताल क़िज़ी
ताशकंद राज्य प्राच्यविद्या विश्वविद्यालय, उज्बेकिस्तान एसोसिएट प्रोफेसर, PhD
+998909474123
kamolarahmatjonova@gmail.com

सारांश:

प्रस्तुत शोध पत्र में उज्बेक और हिंदी भाषाओं में प्रयुक्त खाद्य-सामग्री घटकों से युक्त मुहावरों का तुलनात्मक भाषा-सांस्कृतिक दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है। दोनों समाजों की संस्कृति में भोजन न केवल आजीविका का साधन है, बल्कि यह सामाजिक संबंधों, नैतिक मूल्यों, आर्थिक स्थिरता, सत्ता और न्याय की अवधारणाओं के प्रतीक के रूप में भी प्रकट होता है। इस अध्ययन में उज्बेक मुहावरे जैसे ‘uy o‘chog‘ini yoqmoq’ (घर का चूल्हा जलाना), ‘xamirdan qil sug‘urgandek’ (मक्खन से बाल निकालने की तरह), ‘tuzini yeb, tuzlig‘iga tupurmoq’ (नमक हराम), और ‘nonini yarimta qilmoq’ (रोटी आधी करना) का हिंदी के समकक्ष मुहावरों के साथ अर्थात्मक और व्यावहारिक स्तर पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। विश्लेषण यह दर्शाता है कि यद्यपि दोनों संस्कृतियों में कुछ खाद्य-सामग्री बिंबों का वैचारिक आधार समान है, फिर भी उनके राजनीतिक और सामाजिक अर्थों में महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान हैं।

मुख्य शब्द: भाषा-संस्कृति, मुहावरा विज्ञान, खाद्य-सामग्री, राजनीतिक विमर्श, उज्बेक भाषा, हिंदी भाषा, सांस्कृतिक अस्मिता।

Introduction

हाल के वर्षों में, भाषाविज्ञान, सांस्कृतिक अध्ययन, नृविज्ञान और साहित्यिक विमर्श के चौराहे पर खाद्य-सामग्री का विषय एक महत्वपूर्ण शोध वस्तु बन गया है। भाषाई इकाइयाँ, विशेष रूप से मुहावरे, किसी राष्ट्र के ऐतिहासिक अनुभव, विश्वदृष्टि और सामाजिक स्मृति को संजोए रखते हैं। खाद्य-सामग्री आधारित मुहावरे लोगों की श्रम संस्कृति, आर्थिक जीवन, धार्मिक विश्वासों और राजनीतिक संबंधों को

प्रतिबिंबित करने वाली महत्वपूर्ण भाषाई इकाइयाँ हैं। चूंकि उज्बेक और हिंदी दोनों ही प्राचीन कृषि सभ्यताओं से जुड़े हैं, इसलिए उनकी मुहावरेदार व्यवस्था में रोटी, नमक, दूध और चूल्हा जैसे बिंब विशेष स्थान रखते हैं। हालांकि, इन बिंबों का अर्थात्मक विकास और विशिष्ट राजनीतिक विमर्श में उनका उपयोग दोनों संस्कृतियों के ऐतिहासिक विकासक्रम द्वारा निर्धारित होता है। उदाहरण के लिए, उज्बेक भाषा में प्रयुक्त 'uy o'chog'ini yoqmoq' (घर का चूल्हा जलाना) या 'qozoni qaynamoq' (पतीली उबलना) मुहावरे का अर्थ परिवार का भरण-पोषण करना, घर चलाना और आर्थिक स्थिरता बनाए रखना है। हिंदी भाषा में प्रचलित 'घर का चूल्हा जलाना' भी बिल्कुल इसी अर्थ को व्यक्त करता है।

उज्बेक और हिंदी भाषाओं में प्रयुक्त 'uy o'chog'ini yoqmoq', 'qozoni qaynamoq' तथा 'घर का चूल्हा जलाना' मुहावरे न केवल समानार्थी हैं, बल्कि संरचनात्मक, सांस्कृतिक और कार्यात्मक दृष्टिकोण से एक आदर्श रूपात्मक समानता भी प्रस्तुत करते हैं। इन मुहावरों के मूल में दोनों देशों की सदियों पुरानी जीवन शैली, दर्शन और पारिवारिक मूल्य समाहित हैं।

उज्बेक संस्कृति में पारिवारिक समृद्धि और आर्थिक जीवन सीधे तौर पर चूल्हे और पतीली से जुड़ा है। ये अवधारणाएं खानाबदोश और स्थायी तुर्की दोनों ही समाजों में केंद्रीय स्थान रखती थीं। तुर्की पौराणिक कथाओं और विश्वदृष्टि में चूल्हा केवल खाना पकाने का स्थान नहीं, बल्कि एक पवित्र स्थान है, जो परिवार के सदस्यों को एकजुट करने और उनकी रक्षा करने वाली शक्ति का प्रतीक माना जाता है। चूल्हे का जलना जीवन की निरंतरता, वंश के बने रहने और घर के जीवंत होने का सूचक है। यही कारण है कि उज्बेक समाज में 'o'chog'ing o'chmasin' (तुम्हारा चूल्हा कभी न बुझे) की दुआ सबसे बड़ी शुभकामनाओं में से एक मानी जाती है। पतीली का उबलना घर में भोजन की उपलब्धता और आर्थिक स्थिरता को दर्शाता है। यदि परिवार में आय का साधन न हो, तो सबसे पहले पतीली खाली रहती है। इसलिए, 'qozoni qaynab turibdi' (उसकी पतीली उबल रही है) मुहावरा सीधे तौर पर 'आय का स्रोत होना' या 'घर का खर्च चलाना' दर्शाता है।

Linguistic Analysis of Specific Borrowed Etymologies

हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति में भी बिल्कुल यही अर्थात्मक मॉडल काम करता है। यद्यपि इन भाषाओं की आनुवंशिक और रूपात्मक उत्पत्ति भिन्न-भिन्न भाषा परिवारों से हुई है, फिर भी सामाजिक-घरेलू जीवन शैली की समानताओं ने इस भाषाई समरूपता को जन्म दिया है। भारतीय समाज में 'चूल्हा' परिवार की एकता और आर्थिक स्थिति का मुख्य पैमाना है। पारंपरिक संयुक्त भारतीय परिवारों में,

**Author(s): à¤°à¤–à¤®à¤¤à¤œà¥‹à¤¨à¥‹à¤µà¤¾ à¤•à¤¾à¤®à¥‹à¤²à¤¾
à¤…à¤¬à¥• à¤¦à¥• à¤®à¥• à¤¤à¤¾à¤² à¤•à¤¼à¤¿à¤œà¤¼à¥€**

**Gauri Tower, B wing, 2nd floor, Flat no 12, Chaudhary colony, Beturkar Padha, Kalyan west, Thane, Pincode: - 421301, Maharashtra, India
Mobile: +91 8090100900
Email: ubsirjhss@gmail.com, manishmuntazir@gmail.com**
DOI:| V.12 | 12: Apr-Jun 2026

परिवार के विभाजन का मुख्य संकेत यह माना जाता था कि उनके चूल्हे अलग हो गए हैं। उदाहरण के लिए: 'उनका चूल्हा अलग हो गया'। उज्बेक संस्कृति में भी इसके समकक्ष 'qozonini alohida qilmoq' (अपनी पतीली अलग करना) मुहावरा परिवार से स्वतंत्र एक नए घर की स्थापना को दर्शाता है। अतः 'घर का चूल्हा जलाना' का तात्पर्य प्रत्येक दिन परिवार के सदस्यों के भरण-पोषण के लिए धन कमाना, श्रम करना और घर की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करना है। यदि कोई व्यक्ति बेरोजगार या धनहीन हो जाए, तो हिंदी में 'घर का चूल्हा ठंडा हो गया' मुहावरे का प्रयोग किया जाता है।

पूर्वी राष्ट्र (तुर्की और हिंद-आर्य दोनों) प्राचीन काल से स्थायी या अर्ध-स्थायी जीवन व्यतीत करते आए हैं और खाना पकाने तथा घर को गर्म रखने के लिए आग और चूल्हे पर पूरी तरह निर्भर थे। इस भौतिक आवश्यकता ने भाषाई व्यवस्था में 'आग/चूल्हा = जीवन/अर्थव्यवस्था' के रूपक को जन्म दिया। हालांकि यहाँ मनोवैज्ञानिक समानांतरता अधिक दिखाई देती है: अर्थात दोनों समाजों ने एक-दूसरे से स्वतंत्र रहकर, समान जीवन अनुभवों के आधार पर भाषा की इस मुहावरेदार परत का निर्माण किया है।

उज्बेक भाषा के मुहावरे 'oshga pashsha tushmoq' (पुलाव में मक्खी गिरना) और हिंदी संस्कृति के मुहावरे 'दूध में से मक्खी की तरह निकालना' को पवित्रता और दिव्यता के प्रतीक में किसी बाहरी अवांछित तत्व के हस्तक्षेप के रूप में समझा जाता है। इसलिए यह मुहावरा किसी ऐसे व्यक्ति को आसानी से दरकिनार या समाज से निष्कासित करने के अर्थ को व्यक्त करता है जो अब अनुपयोगी या बेकार हो चुका है।

यह सर्वविदित है कि उज्बेक घरों की संस्कृति में 'osh' (पुलाव) केवल एक दैनिक भोजन नहीं है। यह उत्सवों, विवाहों, आतिथ्य और सामूहिक सभाओं का मुख्य प्रतीक है। पुलाव बनाना और उसका सेवन करना एक निश्चित लय, अनुष्ठान और उत्सव के माहौल से जुड़ा है। यहाँ संज्ञानात्मक मॉडल 'अच्छा माहौल/बड़ी खुशी (पुलाव) + अप्रत्याशित नकारात्मक तत्व (मक्खी)' के रूपक पर आधारित है। इसका अर्थ किसी सुखद, जीवंत बातचीत या कार्य के बीच किसी अप्रत्याशित, अप्रिय व्यक्ति या घटना का आ जाना और मूड खराब कर देना है। शुरुआत में घरेलू जीवन के स्वच्छ और पवित्र भोजन में एक अशुद्ध कीड़े के गिरने की वास्तविक स्थिति बाद में अमूर्त सामाजिक संबंधों में 'बाधा डालने' या 'योजनाओं को बिगाड़ने' के अर्थ में परिवर्तित हो गई।

इसके विपरीत, भारतीय संस्कृति में 'दूध' पूर्ण शुचिता, पवित्रता और दिव्यता का प्रतीक है। दूध 'पंचामृत' के मुख्य घटकों में से एक है। संस्कृत से अनुवाद करने पर 'पंच' का अर्थ पांच और 'अमृत' का अर्थ दिव्य

**Author(s): à¤°à¤–à¤®à¤¤à¤œà¥‹à¤¨à¥‹à¤µà¤¾ à¤•à¤¾à¤®à¥‹à¤²à¤¾
à¤…à¤¬à¥• à¤¦à¥• à¤®à¥• à¤¤à¤¾à¤² à¤•à¤¼à¤¿à¤œà¤¼à¥€**

**Gauri Tower, B wing, 2nd floor, Flat no 12, Chaudhary colony, Beturkar Padha, Kalyan west, Thane, Pincode: - 421301, Maharashtra, India
Mobile: +91 8090100900
Email: ubsirjhss@gmail.com, manishmuntazir@gmail.com**
DOI:| V.12 | 12: Apr-Jun 2026

रस या जीवनदायिनी जल (अमरता का जल) होता है। यह पवित्र मिश्रण पांच तत्वों से तैयार किया जाता है: दूध, दही, शहद, घी और चीनी। भारतीय परंपराओं में पंचामृत न केवल धार्मिक अनुष्ठानों का हिस्सा है, बल्कि स्वास्थ्य के लिए लाभदायक, शरीर और आत्मा को शुद्ध करने वाले पेय के रूप में भी उच्च माना जाता है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में शुचिता और अशुचिता की अवधारणाओं के बीच बहुत गहरी विभाजन रेखा है। दूध में मक्खी का गिरना उस पवित्र उपहार को पूरी तरह से मूल्यहीन और दूषित कर देता है। परंतु, इस मुहावरे का मुख्य बल मक्खी के गिरने पर नहीं, बल्कि उसे किस प्रकार बाहर फेंक दिया जाता है, उस पर केंद्रित है। 'दूध में से मक्खी की तरह निकालना' मुहावरे का व्यावहारिक अर्थ किसी व्यक्ति, टीम या परियोजना से उसकी सेवाओं का पूरी तरह से उपयोग करने के बाद, उसे बिना किसी मूल्य के, एक बेकार वस्तु की तरह आसानी से और बेरहमी से त्याग देना या दरकिनार कर देना है। चूंकि दूध में गिरी मक्खी पूरे तरल को दूषित कर देती है, इसलिए उसे तुरंत और बिना किसी हिचकिचाहट के उंगली की नोक से उठाकर बाहर फेंक दिया जाता है। यह वास्तविक क्रिया सामाजिक संबंधों में 'अनुपयोगी व्यक्ति से आसानी से छुटकारा पाने' की उपयोगितावादी विचारधारा को व्यक्त करने वाला मुहावरा बन गई है।

उज्बेक भाषा का 'oshga pashsha tushmoq' मुहावरा स्थितिजन्य अप्रियता को व्यक्त करता है, जबकि हिंदी का 'दूध में से मक्खी की तरह निकालना' सामाजिक संबंधों में परिणामोन्मुखता को दर्शाता है। दोनों भाषाओं के बोलने वालों ने अपने सबसे मूल्यवान राष्ट्रीय व्यंजनों (पुलाव और दूध) में मक्खी के हस्तक्षेप के माध्यम से मूल्यहीनता को रूपकित किया है। यह इस बात का प्रमाण है कि मानव संज्ञानात्मक चिंतन के आधार बिंदु (शुचिता, सौंदर्य और उनका खंडन) भाषाई विकास में समान प्रतिमानों को जन्म देते हैं।

हिंदी का 'नमक हलाली' वफादारी और निष्ठा को दर्शाता है, जबकि 'नमक हरामी' विश्वासघात, कृतघ्नता और विश्वास के दुरुपयोग को प्रकट करता है। भारतीय समाज में ऐतिहासिक रूप से 'नमक' मालिक और सेवक के बीच वफादारी के अनुबंध का प्रतीक रहा है। उज्बेक भाषा का मुहावरा 'tuzini yeb, tuzlig'iga tupurmoq' (जिसका नमक खाया उसी के नमकदान में थूकना) भी विश्वासघात को ही व्यक्त करता है।

हालांकि, यहाँ मुख्य बल आतिथ्य-सत्कार और नमक-रोटी के सम्मान के उल्लंघन पर दिया जाता है। उज्बेक संस्कृति में रोटी और नमक को मानवीय संबंधों का एक पवित्र मानदंड माना जाता है। यद्यपि दोनों भाषाओं में नमक एक ही प्रतीकात्मक कार्य करता है, फिर भी हिंदी में यह पदानुक्रमित वफादारी -

Gauri Tower, B wing, 2nd floor, Flat no 12, Chaudhary colony, Beturkar Padha, Kalyan west, Thane, Pincode: - 421301, Maharashtra, India
Mobile: +91 8090100900
Email: ubsirjhss@gmail.com, manishmuntazir@gmail.com
DOI:| V.12 | 12: Apr-Jun 2026

मालिक के प्रति निष्ठा को दर्शाता है, जबकि उज्बेक भाषा में यह नैतिक और मानवीय कर्तव्य को अभिव्यक्त करता है।

उज्बेक भाषा का 'nonini yarimta qilmoq' (किसी की रोटी आधी करना) और हिंदी का 'कौर छीनना' मुहावरे किसी व्यक्ति को उसकी आजीविका से वंचित करने और उसके आर्थिक अधिकारों को कुचलने के अर्थ को व्यक्त करते हैं। साहित्यिक कृतियों में इन मुहावरों का व्यापक उपयोग वर्ग असमानता और गरीबी के चित्रण में किया जाता है।

राजनीतिक विमर्श में ये मुहावरे भ्रष्टाचार, अन्यायपूर्ण आर्थिक नीतियों या आम जनता के श्रम के शोषण की आलोचना करने का एक सशक्त साधन बन जाते हैं। 'कौर' या 'निवाला' दोनों संस्कृतियों में मनुष्य के जीवित रहने के सबसे बुनियादी अधिकार का प्रतीक है, और उसे छीनना मानवीय गरिमा पर आघात माना जाता है।

तालिका 1: उज्बेक और हिंदी खाद्य-सामग्री मुहावरों का तुलनात्मक ढांचा

क्र.सं.	भाषाई इकाइयाँ (उज्बेक / हिंदी)	वैचारिक केंद्र	समाजशास्त्रीय मॉडल	राजनीतिक-व्यावहारिक विमर्श में भूमिका
1.	Qozoni qaynamoq / चूल्हा जलाना	अग्नी / चूल्हा	पारिवारिक-आर्थिक स्थिरता	सामाजिक सुरक्षा और भौतिक कल्याण के स्तर का मूल्यांकन।
2.	Oshga pashsha tushmoq / दूध में से मक्खी की तरह निकालना	मक्खी (बाहरी तत्व)	स्थितिजन्य व्यवधान / उपयोगितावादी निष्कासन	व्यवस्था या समूह से किसी व्यक्ति को बाहर फेंके जाने की आलोचना।
3.	Tuzlig'iga tupurmoq / नमक हरामी	नमक (रोटी/आजीविका)	सार्वभौमिक नैतिक कर्तव्य / पदानुक्रमित वफादारी	राजनीतिक विश्वासघात और वैचारिक गद्दारी की निंदा।
4.	Nonini yarimta	निवाला / रोटी	जीवन के मौलिक	भ्रष्टाचार और

Author(s): à¤°à¤–à¤®à¤¤à¤œà¥‹à¤¨à¥‹à¤µà¤¾ à¤•à¤¾à¤®à¥‹à¤²à¤¾
à¤…à¤¬à¥• à¤¦à¥• à¤®à¥• à¤¤à¤¾à¤² à¤•à¤¼à¤¿à¤œà¤¼à¥€
Gauri Tower, B wing, 2nd floor, Flat no 12, Chaudhary colony, Beturkar Padha, Kalyan west, Thane, Pincode: - 421301, Maharashtra, India
Mobile: +91 8090100900
Email: ubsirjhss@gmail.com, manishmuntazir@gmail.com
DOI:| V.12 | 12: Apr-Jun 2026

	qilmoq / कौर छीनना		अधिकार का हनन	आर्थिक अन्याय का भंडाफोड़ करना।

उज्बेक और हिंदी भाषाओं में खाद्य-सामग्री घटकों से युक्त मुहावरों का भाषा-सांस्कृतिक, अर्थात्मक और व्यावहारिक अध्ययन दोनों समाजों के सदियों पुराने सामाजिक-सांस्कृतिक अनुभव, सामाजिक संरचना और संज्ञानात्मक विश्वदृष्टि को प्रकट करने वाले महत्वपूर्ण भाषाई तथ्य प्रस्तुत करता है। इस तुलनात्मक विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं:

- **संज्ञानात्मक-रूपकात्मक समानांतरता:** आनुवंशिक रूप से भिन्न परिवारों से संबंधित होने के बावजूद उज्बेक और हिंदी समाजों में 'आग/चूल्हा = जीवन/आर्थिक स्थिरता' का संज्ञानात्मक प्रतिमान दोनों संस्कृतियों के दैनिक जीवन की व्यावहारिक समानताओं से उपजा है। चूल्हा दोनों ही पारंपरिक समाजों में जीवन की निरंतरता का प्रतीक है।
- **सांस्कृतिक मानकों की विशिष्टता :** जहाँ उज्बेक समाज सामूहिक उल्लास और आतिथ्य के प्रतीक के रूप में पुलाव को अपना भाषाई मानक बनाता है, वहीं भारतीय समाज पूर्ण आध्यात्मिक शुचिता और धार्मिक अनुष्ठानों के आधार के रूप में दूध को प्रधानता देता है।
- **व्यावहारिक एवं राजनीतिक विमर्श में भूमिका:** राजनीतिक और सामाजिक विमर्श में ये मुहावरे घरेलू दायरे से बाहर निकलकर राज्य की नीतियों, भ्रष्टाचार, सामाजिक असमानता और आम लोगों के अधिकारों के दमन के खिलाफ एक सशक्त आलोचनात्मक भाषाई उपकरण के रूप में कार्य करते हैं।

संक्षेप में खाद्य-सामग्री आधारित मुहावरे उज्बेक और भारतीय लोगों की सांस्कृतिक अस्मिता को अक्षुण्ण रखने तथा उनकी वैचारिक विरासत को भावी पीढ़ियों तक स्थानांतरित करने में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं।

References:

Rahmatullayev Sh. O‘zbek tilining izohli frazeologik lug‘ati. – Toshkent: O‘qituvchi, 1978. – 408 b.

Маслова В. А. Лингвокультурология: Учеб. пособие для студ. высш. учеб. заведений. – Москва: Академия, 2001. – 208 с.

Author(s): à¤°à¤–à¤®à¤¤à¤œà¥‹à¤¨à¥‹à¤µà¤¾ à¤•à¤¾à¤®à¥‹à¤²à¤¾ à¤…à¤¬à¥• à¤¦à¥• à¤®à¥• à¤¤à¤¾à¤² à¤•à¤¼à¤¿à¤œà¤¼à¥€

Gauri Tower, B wing, 2nd floor, Flat no 12, Chaudhary colony, Beturkar Padha, Kalyan west, Thane, Pincode: - 421301, Maharashtra, India
Mobile: +91 8090100900
Email: ubsirjhss@gmail.com, manishmuntazir@gmail.com

DOI:| V.12 | 12: Apr-Jun 2026

तिवारी भोलानाथ. हिंदी मुहावरा कोश. – नई दिल्ली: किताब महल, 2008. – 648 p.

Yusupov U. K. Contrasting Linguistics of the Uzbek and English languages. – Toshkent: Akademnashr, 2013. – 288 b.

Ashurova D. U., Galieva M. R. Cultural Linguistics. – Toshkent: Vneshinvestprom, 2019. – 208 b.

Author(s): à¤°à¤–à¤®à¤¤à¤œà¥‹à¤¨à¥‹à¤µà¤¾ à¤•à¤¾à¤®à¥‹à¤²à¤¾
à¤…à¤¬à¥• à¤¦à¥• à¤®à¥• à¤¤à¤¾à¤² à¤•à¤¼à¤¿à¤œà¤¼à¥€

Gauri Tower, B wing, 2nd floor, Flat no 12, Chaudhary colony, Beturkar Padha, Kalyan west, Thane, Pincode: - 421301, Maharashtra, India
Mobile: +91 8090100900
Email: ubsirjhss@gmail.com, manishmuntazir@gmail.com
DOI:| V.12 | 12: Apr-Jun 2026